दिनांक : 10 फरवरी 2014

मोदी की रैलियों ने देश का मूड पकड़ा

– अरुण जेटली
राज्य सभा में विपक्ष के नेता

श्री नरेन्द्र मोदी के लिए पिछला सप्ताह काफी व्यस्तता से भरा रहा। शनिवार को वह इम्फाल, गुवाहाटी में थे और अंत में उन्होंने चेन्नई में रैलियों को संबोधित किया। रविवार को चेन्नई के एक शिक्षण संस्थान में एक कार्यक्रम में शामिल होने के बाद उन्होंने कोच्चि और तिरुवनंतपुरम में विभिन्न समारोहों को संबोधित किया।

इन सार्वजनिक समारोहों में नरेन्द्र मोदी के प्रति जनता का भारी उत्साह देखने को मिला। इम्फाल की रैली को मणिपुर में सबसे बड़ी राजनैतिक रैली माना जा रहा है। भाजपा का संगठन मणिपुर में बहुत मजबूत नहीं है। इसके बावजूद मोदी की रैली में भारी भीड़ का जुटना जनता के मूड को बताता है। गुवाहाटी और चेन्नई में पार्टी की रैलियों में और अंत में केरल में उन्होंने विशाल भीड़ को आकर्षित किया। उनके अन्य समारोहों ने धार्मिक और जाति के आधार पर बांटने वालों को चुनौती दी। जिन समुदायों में पहले भाजपा को कम समर्थन देखने को मिलता था, वहां लोगों ने अपने समारोहों में बड़े उत्साह के साथ उन्हें आमंत्रित किया।

कांग्रेस से लोगों का मोह भंग हो चुका है। लोग उम्मीद से देख रहे हैं। क्या श्री मोदी उस विश्वास का प्रतीक हैं जिसका उत्तेजित जनता को इंतजार है? लोग कद्दावर, प्रेरणा देने वाला और निर्णायक नेता चाहते हैं। वे ईमानदारी के मानक नये सिरे से तय करना चाहते हैं? मूल्य वृद्धि, बेरोजगारी और अर्थव्यवस्था में ठहराव जैसी चीजें उन्हें परेशान कर रही हैं। देश के उत्तरी, मध्य और पश्चिमी भागों में भाजपा के गढ़ों में मोदी की रैलियों में भारी भीड़ का जुटना स्वाभाविक है लेकिन जिन इलाकों में भाजपा परम्परागत दृष्टि से मजबूत नहीं है उन इलाकों में मोदी की ऐसी जबरदस्त रैलियों का क्या अर्थ निकाला जा सकता है? पूर्वोत्तर, पश्चिम बंगाल, आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु और केरल में मोदी की रैलियों में लोगों की भारी भीड़ और लोगों की प्रतिक्रिया रोमांचित कर देने वाली रही? क्या इस झुकाव को कुछ और समझा जा सकता है?

निश्चित तौर पर ऐसी विशाल भीड़ यूं ही नहीं जुट सकती? यह एक मजबूत अंतर्प्रवाह का संकेत है, जो गुस्से और विश्वास के कारण पैदा हुआ है। लोग यथास्थिति से नाराज हैं। वे बदलाव चाहते हैं। मोदी ऐसे बदलाव और विश्वास का प्रतीक हैं जो बेहतरी के लिए होगा। मोदी के पीछे राजनैतिक समर्थन को अब इस चुनाव में मोदी के लिए मत संग्रह में बदलने की जरुरत है। उन राज्यों में समाज के विभिन्न वर्गों का समर्थन भाजपा की ताकत से ज्यादा बड़ा है। क्या हम इन क्षेत्रों में सुखद आश्चर्य की तरफ बढ़ रहे हैं?

*****